ISSN: 2456–5474 RNI No.UPBIL/2016/68367 Vol-3* Issue-2*March- 2018
Innovation The Research Concept

राहुल सांकृत्यायन का व्यक्तित्व–युगबोध और भविष्य दृष्टि

अजीत कुमार
शोधार्थी,
हिन्दी विभाग,
तिलकामांझी भागलपुर
विश्वविद्यालय
दुमका, झारखण्ड

सारांश

साहित्य का समाज से अभिन्न होने के अर्थ में ही साहित्य की सार्थकता निहित होती है। साहित्य में निहित सामाजिक संवेदना और तत्कालीन सामाजिक बोध की यथार्थपरक उपस्थिति ही साहित्य के शुद्धरूप का परिचायक होता है। अधुनिककालीन अर्थात् 19वीं शताब्दी से अब तक के भारतीय समाज में जाति, धर्म, अमीरी–गरीबी जैसे विषय ही प्रमुख रहे हैं य इन्हीं विषयों का जिस सीमा तक हिन्दी साहित्य के जिन रचनाओं में दर्शन होता है वह उतनी ही विशिष्टता के साथ हमारे सामने उपस्थित होती है द्य इस दृष्टि से राहुल सांकृत्यायन का साहित्य हमारे लिए सर्वाधिक विचारणीय है।

मुख्य शब्द : व्यक्तित्व निर्माण, रचनाओं में निहित युगबोध, भविष्य दृष्टि, हिन्दी नवजागरण में योगदान, साहित्य –रचना, हिन्दी प्रेम

प्रस्तावना

आमोदार्थी यथा भृङ्गः पुष्पात पुष्पान्तरं व्रजेत ।
विज्ञानार्थी तथा शिष्यो गुरोर्गुर्वान्तरं व्रजेत।।

अभिनवगुप्त (तंत्रालोक)

आचार्य अभिनव गुप्त की भाँति पंडित राहुल सांकृत्यायन भी ज्ञान की किसी एक विधा में बंधकर नहीं रह पाए। आमोदार्थी भौंरे के समान ज्ञान रूपी पुष्प के सौरभ का रसपान करने के लिए ज्ञान की विभिन्न शाखाओं पर अपना गमनागमन आजीवन जारी रखा ।

राहुल सांकृत्यायन अकेले ऐसे साहित्यकार हैं, जिन्होंने अपनी लेखनी से इतने विषयों को अपनी रचनाओं में स्थान दिया है य साथ ही इतनी विधाओं में अपनी लेखनी चलायी है द्य कहा गया है। "गद्यं कवीनां निकषं वदन्ति। " राहुल जी ने अपने गद्य के माध्यम से चाहे वह कहानी,उपन्यास, नाटक, आत्मकथा, इत्यादि जो कुछ भी हो सब में देश–विदेश में छिपे भारतीय संस्कृति के प्रमाणों–साक्ष्यों को खोजकर एकत्र करने का कार्य किया है। साथ ही कहानी–उपन्यासों एवं नाटकों में एक नई दृष्टि के साथ ऐतिहासिक दस्तावेजों को प्रमाणिक बनाने की कोशिश करते हैं।

व्यक्तित्व निर्माण

हिन्दी के आधुनिक कालीन साहित्यकारों की एक लंबी श्रृंखला है जिनमें प्रत्येक के साहित्य के अपने रंग हैं । प्रत्येक साहित्यकार अपने पूर्व वर्ती किसी–न–किसी महापुरूषों से प्रभावित होकर अपनी चेतना को विकसित करता है। जिससे उक्त साहित्यिकों के विचार व लेखन में अपने पूर्ववर्ती के विचार अंशतः या पूर्णतः निहित होते हैं। इस तरह राहुलजी भी अपने पूर्ववर्ती व्यक्तित्वों से लगातार प्रभावित होते रहे। तभी एक मध्यवर्गीय ब्राह्मण जाति के संस्कार उन्हें बांध नहीं पाये। राहुल जी अपने जीवन में संकीर्ण वैचारिकी से व्यापक व विस्तृत वैचारिकी की ओर निरंतर बढ़ते गये। "सनातन धर्म से आर्य समाज की ओर, आर्य समाज से बौद्ध धर्म की ओर,बौद्ध धर्म से मार्क्सवाद की ओर" की यह लम्बी श्रृंखला दल–परिवर्तन के रूप में जो दिखाई पड़ती है। य इसके मूल में मानव–जीवन के व्यापकत्व की खोज है। इसी खोजी वृत्ति ने इन्हें घुमक्कड़ बनाया य जिससे पूर्व और पश्चिम के देशों की संस्कृति–सभ्यता से इनका परिचय हुआ। इन्हें मानव–जीवन के विभिन्न संस्कारों, विचारों और जीवन–शैलियों को जानने का अवसर मिला। इन्हीं घुमक्कड़ी ने दर्शन,इतिहास, विज्ञान एवं साहित्य के विशाल भंडार को सृजित करने की प्रेरणा प्रदान की। 'भारतीय संस्कृति में अतीत के प्रति मोह' का प्रदर्शन अधिक देखने को मिलता है महाभारत में कहागयाहै –

"तर्कोऽप्रतिष्ठःश्रुतयोविभिन्ना
नैकोमुनिर्यस्यमतम्प्रमाणम।

धर्मस्यतत्वंनिहितंगुहायाम
महाजनोयेनगतःसपन्था।।"

परन्तु राहुलजी उन जड़ परम्परावादियों जैसे नहीं थे। परम्परा की जड़ता के बंधन को तोड़ने की कोशिश आजीवन करते रहे। गुहाओं से धर्म के तत्व को निकाल कर सामान्य जन के बीच रखना ही अपने जीवन का परम कर्तव्य मानते थे। पूर्वजों के रास्तों का अन्धानुकरण करने वालों में नहीं अपितु उन रास्तों की जाँच पड़ताल कर उचितानुचित का विचार करके "दृष्टिपूतं न्यसेत्पादं" को मानने वाले थे।

हिन्दी नवजागरण में योगदान

19वीं शताब्दी में भारतीय नवजागरण की शुरुआत जिन महापुरुषों द्वारा की जाती है। उनमें राजा राममोहन राय, रामकृष्ण परमहंस, विवेकानन्द, लोकमान्य तिलक, ईश्वरचंद्र विद्यासागर, दयानन्द सरस्वती का नाम प्रमुख है। इसमें विवेकानन्द सबसे विस्तृत ज्ञान एवं गतिशीलता के साथ हमारे बीच उपस्थित होते हैं। इसी क्रम में राहुल सांकृत्यायन भी नवजागरण के विस्तृत युगबोध के साथ हिन्दी में अवतरित होते हैं। राहुलजी विवेकानन्द के बाद पहले व्यक्तित्व थे जिन्होंने अपने बहुआयामी चेतना से भारतीय संस्कृति को पुष्ट किया है। भले ही भारतीय संस्कृति के विभिन्न विषयों पर इनका लेखन निरन्तरता के साथ बना रहा दृचाहे वह दर्शन, इतिहास, कहानी, निबन्ध, उपन्यास, नाटक, भूगोल इत्यादि हो, परन्तु सारी रचनाओं का मूल उद्देश्य मानव जीवन का उद्धार ही है। जिस प्रकार जाति परम्परा में निहित बुराइयों के कारण ही राहुल जी आर्यसमाज, बौद्धधर्म एवं मार्क्सवाद के माध्यम से उन मानवीय मूल्यों की स्थापना करने में लगे रहे जिन्हें हमारा समाज तिरस्कार के भाव से देखता रहा है। उसी प्रकार भारतीय संस्कृति के उन विचारकों की रचनाओं का भी उद्धार किया, जिस पर इनसे पूर्व किसी की दृष्टि न थी। भारतीय संस्कृति की अमूल्य निधियाँ जो भारत में या दूसरे देशों में भी पड़ी हुई थी, उसे खोजकर व्यवस्थित ढंग से सुरक्षित करने का कार्य इन्होंने किया। फलतः पाली,संस्कृत,अपभ्रंश,प्राकृत भाषा के ढेर ग्रंथों का इन्होंने उद्धार किया। इस कारण राहुलजी भारतीय संस्कृति के उद्धारक के रूप में हमारे सामने उपस्थित होते हैं।

राहुलजी अपनी साहित्यिक रचनाओं में भारतीय इतिहास का उपयोग प्रसादजी के नाटकों की ही भाँति करते हैं। परन्तु प्रसादजी की अपेक्षा राहुलजी का चिंतन पक्ष अधिक गंभीरता के साथ मानवीय अनुभूतियों एवं संवेदनाओं को पकड़ता प्रतीत होता है। उनकी रचनाओं में ऐतिहासिकता के माध्यम से यथार्थ की जमीन को दिखाने की चेष्टा अधिक हुई है, जो उनके वर्तमान युगबोध की समझ और भविष्य के प्रति सजगता का परिचय देने के साथ ही भविष्य के रास्ते का निर्माण करती नजर आती है।

युगबोध और भविष्यदृष्टि

युगबोध शब्द का अर्थ बहुत व्यापक होता है। शब्दशः युग और बोध शब्द का सम्मिलन युगबोध है। इसमें युग का सम्बन्ध काल से है, जिसकी समाप्ति के पूर्व उसके काल का सीमांकन असंभव है। क्योंकि किसी युग का काल कम भी हो सकता है और किसी का अधिक भी।

रचनाकार समकालीन जीवन और परिवेश के अनुभवों से चेतना के स्तर पर जिस सक्रिय चिन्तन को जन्म देता है उसे ही बोध कहते हैं। किसी भी युग की जीवन पद्धतियाँ विभिन्न विचार –सरणियों से प्रेरित होती है। रचनाकार का चिन्तन भी उन्हीं विचारधाराओं से पल्लवित–पुष्पित होता है। इन्हीं विचारधाराओं को य जो युगीन जीवन–शैलियों के बोधात्मक स्वरूपों को परिचालित करती है रू युगबोध कहलाती हैं।

साहित्य के युगबोध के अंतर्गत वर्तमानकालीन ज्वलंत प्रश्नों, समस्याओं, युग की औसत मानसिकता प्रमुख विचारधाराओं और प्रमुख ऐतिहासिक घटनाओं तथा उनकी प्रतिक्रियाओं को रखा जाता है। व्यापक रूप में युगबोध के अन्तर्गत किसी युग के मान–मूल्यों, मूल्य–संक्रमण एवं मूल्य–परिवर्तन का भी समावेश होता है।

साहित्यकार, दार्शनिक एवं विचारक–चिंतक अपने युग की उपज होता है। इसलिए युगीन प्रेरणाओं से वह अछूता नहीं रह सकता। उसका दृष्टिकोण उसकी संवेदनशीलता व उसका व्यक्तित्व अपने परिवेशगत सन्दर्भों से संपूर्णतरू कट नहीं सकता बल्कि उसकी सौन्दर्य चेतना अपने आप में एक तरह की सामाजिक संस्था ही होती है। जिसका सम्बन्ध समाज की दूसरी संस्थाओं से किसी खास तरीके से जुड़ा हुआ होता है। 'युग' एक विस्तृत कालखण्ड है। इसकी गणना वर्षों की मात्रा से करना अधिक संगत नहीं होगा। इसका कारण यह है कि केवल काल के अन्तराल विशेष से युग नहीं बनता। कभी–कभी कुछ ही वर्षों में युग परिवर्तन हो जाता है जिसके प्रभाव का अनुभव जीवन के विविध क्षेत्रों में किया जा सकता है। काल विस्तार की अपेक्षा, युग की सामाजिक चेतना अथवा जन चिंतन है जो रचना के माध्यम से अभिव्यक्ति पाकर युगबोध बन जाता है। काल में परिवर्तन का होना एक शाश्वत प्रक्रिया है। समय के परिवर्तन के साथ विगत काल की कुछ परम्पराएँ उससे कभी–कभी ऐसे जुड़ जाती है कि वह हमारे जीवन का अंग बन जाती हैं। प्रत्येक युग दूसरे युग पर अपनी छाप छोड़ता है। एक युग दूसरे युग को जो कुछ दे जाता है, उसके आदान–प्रदान से नए युग भविष्य की ओर बढ़ते हैं। कोई भी युग अपने आप में महत्वपूर्ण होता है। उसके महत्त्व का मूल्यांकन साहित्य की अन्यान्य विधाओं के माध्यम से व्यक्त होता है।

लेखक अपनी अनुभूति की सजगता व अभिव्यक्ति की बाध्यता के वशीभूत आदर्श अथवा यथार्थ रूप में उस मांग की पूर्ति में प्रवृत्त होता है, जो अपनी परिस्थितियों व अपने परिवेश से प्रभावित होता है और उनसे प्रभावित होकर ही वह अपनी अभिव्यक्ति में उस युग के बोध को लेकर आता है। उसकी रचना में हमें स्पष्टतः उसका व्यक्तित्व भी झलकता मिलता है।

रचनाओं में निहित युगबोध और भविष्यदृष्टि

राहुल जी के औपन्यासिक कृतियों में यथार्थवाद पर विशेष बल दिखाई पड़ता है। ऐतिहासिक उपन्यासकारों की व्यावहारिक समस्याओं "जो रचनारत

लोगों की निजी अनुभूति होती है" का जिक्र करते हुए कहते हैं कि ऐतिहासिक उपन्यास में ऐसे समाज और उसके व्यक्तियों का चित्रण करना होता है जो सदा के लिए विलुप्त हो चुका है, किन्तु उसने पद–चिन्ह कुछ जरूर छोड़े हैं जो उसके साथ मनमानी करने की इजाजत नहीं दे सकते। "मधुरेश के अनुसार– "कोई लेखक जिस देशकाल को अपनी रचना के लिए चुनता है और अपने पात्रों को जिस पृष्ठिभूमि में अंकित करता है, उसकी सम्पूर्ण और वास्तविक जानकारी उसे होनी चाहिए। इस जानकारी के अभाव में रचना न तो प्रामाणिक और विश्वसनीय बन पाएगी और न ही जीवन्त।

राहुलजी के जीवन का अधिकतम समय भारतीय राजनीति में अंग्रेजों के द्वारा गुलाम भारत में बीता था। तब तो निश्चित ही पराधीन भारत में औपनिवेशिक गुलामी, आतंक, दमन और लूट की स्थितियों को देख अन्य भारतीयों की भाँति इनका मन भी विचलित हुआ होगा। तभी उन्होंने लिच्छवियों के जीवन के आदर्श स्वरुप यथा–गणतंत्र, कानून का शासन, जनता और शासक की एकता, भेदभाव रहित बौद्ध धर्म, स्त्रियों के प्रति आदरभाव, अपने विश्वासों के लिए मगध जैसे राज्य से सामना करने की साहसिकता को लक्ष्य करके "सिंहसेनापति" जैसे उपन्यास की रचना की, जिससे प्रत्येक भारतीय के हारे हुए मन को अतीत की साहसिकता से संबल मिल सके य ताकि देश की दुरावस्था से मुक्ति का प्रयास कर पायें। चूँकि लिच्छवि के इतिहास में इन्हें अपना वर्तमान दिखाई पड़ रहा था। तभी उपन्यास लेखन के लिए आवश्यक सामग्री के अभाव में भी इन्होंने अपनी कल्पना एवं प्रज्ञा का यथोचित प्रयोग सिंहसेनापति लिखा। इसी क्रम में राहुलजी का दूसरा ऐतिहासिक उपन्यास, जययौधेय, भी उतना ही महत्त्वपूर्ण है।

राहुलजी व्यव्यहारिक जीवन में एकरूपता बनाये रखते हैं। जिस प्रकार सामान्य जीवन में दलित, पिछड़े एवं समाज द्वारा तिरस्कृत समुदाय का पक्ष लेते नजर आते हैं ठीक उसी प्रकार अपने लेखकीय कर्म के माध्यम से भी उसका उद्धार करते हैं जो इतिहासकारों द्वारा तिरस्कृत हुए, जो राजतंत्रात्मकता के कारण अपने समकालीन राजतंत्र के प्रकाश में अदीप्त प्रतीत होने लगे थे। इसका एक प्रमाण 'जययौधेय' उपन्यास भी है। जिसमें गुप्तकालीन इतिहासों की बड़ी ही गंभीर जाँच की गई है। गुप्तकाल की महानता व प्रताप के आगे यौधेय वंशजों की दीप्ति भी बुझ–सी गई थी, जिसके प्रदीप्त स्वरुप का दर्शन करवाने का कार्य राहुल जी करते हैं। यह उपन्यास इतिहास के साथ–साथ समाजशास्त्र का नमूना भी प्रस्तुत करता है जो परम्परावादी औपन्यासिकता की लीक को तोड़ने का काम करता है। उन्होंने इस उपन्यास की भूमिका में कहा है– "इस उपन्यास के शरीर में ऐतिहासिक सामग्री ने अस्थिपंजर का काम किया। मांस मैंने अपनी कल्पना से पूरा किया। "राहुलजी ने इस उपन्यास में सन् 350ई०–400ई० तक के भारतीय राजनीति और समाज का चित्रण किया है। उस समय यमुना–सतलज तथा चम्बल–हिमालय के बीच 'यौधेय' एक शक्तिशाली गणराज्य था। इसे अपने उपन्यास का विषय बनाने का मूल उद्देश्य भी यही है दृ "इसके प्रति इतिहासकारों का क्रूर मौन"। लंबे कालावधि तक इसका अस्तित्व अतीत के पर्तों के नीचे रहा। लेकिन बाद की खुदाई में मिले इस गणराज्य के सिक्कों ने शोर मचा–मचा कर इसका साक्ष्य देना शुरू किया और फिर कई ऐतिहासिक खोजों के परिणामस्वरूप डॉ. अलतेकर जैसे इतिहासविद् इस निष्कर्ष पर पहुँचे की "भारत से विदेशी कुषाणों के शासन को खत्म करने का श्रेय गुप्तवंश, भारशिव वंश को नहीं, यौधेयों को है।" इस प्रकार बहुप्रमाणित गुप्त एवं भारशिववंशीय साम्राज्य के सामने यौधेयों के अस्तित्व को बताने का उद्देश्य भी उसी तिरस्कृतों के प्रति करुणाभाव का परिचय राहुल जी देते हैं। इस प्रकार राहुलजी का जीवन जड़ साहित्यिकों वाली न होकर एक कुशल समाज शिल्पी का था। उनके सामाजिक अवदानों पर दृष्टि जाने के साथ ही देश के तत्कालीन स्वातंर्त्य आंदोलन में राहुलजी की भागीदारी का प्रश्न सामने खड़ा होता है। उनकी लेखनी तो सदैव ही भारतीय अस्मिता के संरक्षक के रूप में दिखाई पड़ती है साथ ही स्वतंत्रता आंदोलन में भी उनके योगदान स्मरणीय हैं। भारत को आजादी दिलाने का उनका सपना उन्हें स्वतंत्रता आंदोलन की तरफ खींचता रहा। जिसके कारण असहयोग आंदोलन में कूद पड़े। शहीदों के बलिदान उन्हें भीतर तक झकझोरते रहे। उन्होंने एक भाषण में कहा था– "चोरी–चौरा" कांड में शहीद होने वालों का खून देश–माता का चंदन होगा। इसके साथ ही बिहार के छपरा जिले में सत्याग्रह का आयोजन, बाढ़ पीड़ितों की सेवा, गिरफ्तार होकर बक्सर जेल में छह मास कारावास, पुनः जेल से छूटने पर जिला–कांग्रेस मंत्री, गया–कांग्रेस में सक्रिय योग, हजारीबाग जेल में दो साल के कारावास, कानपुर–कांग्रेस के प्रतिनिधि, 1930–31 के सत्याग्रह में भागीदारी, करॉंची–कांग्रेस में भागीदारी, 1934 में बिहार के भूकंप क्षेत्र में सेवा कार्य, 1939 में किसानों–मजदूरों के लिए संघर्ष, अमवारी किसान सत्याग्रह में लाठी की चोटखाना, 1940–42 में प्रांतीय किसान सम्मेलन सभापति, अखिल–भारतीय किसान सम्मेलन और सभा के सभापति, पुनः गिरफ्तारी में हजारीबाग और देवली कैंप में 29 मास की सजा इत्यादि जैसे महत्वपूर्ण कार्य–जो स्वतंर्त्यकालीन सामाजिक–राजनीतिक क्षेत्र में बड़ी भागीदारी थी। गैर साहित्यिक कार्यक्रम में इतना अधिक समय व्यतीत करने के उपरांत भी साहित्य लेखन में रचना की विपुल संख्या को देखकर आश्चर्य होता है कि शायद इतनी रचना एक चमत्कारही है दृवह भी अन्यान्य विषय क्षेत्र में। इस बात का पता प्रोफेसर नामवर सिंह के कथन से चलता है कि "एक क्षण भी मैंने उनको स्थिर नहीं देखा। प्रत्येक क्षण कुछ न कुछ करते ही नजर आये।" यह राहुलजी की समयोपयोगिता और अध्ययन के विषयगत वैविध्य को प्रदर्शित करता है।

साहित्य रचना

राहुल जी की मौलिक रचनाओं में बाईसवीं सदी (1923), जीने के लिए (1939), सिंहसेनापति (1942), जययौधेय (1944), मधुरस्वप्न (1949), राजस्थानी रनिवास (1952), विस्मृतयात्री (1953), दिवोदास (1960), सतमी के बच्चे (कहानी–1935), वोल्गा से गंगा (कहानी–1942), कनौल की कथा (कहानी–1955–56), बहुरंगी मधुपुरी (कहानी–1953) है। अनुवादित रचनाओं में शैतान की

ISSN: 2456–5474 RNI No.UPBIL/2016/68367 Vol-3* Issue-2*March- 2018
Innovation The Research Concept

आँख, विस्मृति के गर्भ में, जादू का मुल्क, सोने की ढाल, दाखुंदा, जो दास थे, अनाथ, अदीना, सूदखोर की मौत, शादी मुख्य है। नाटक के रूप में जपनिया राछछ, देश रच्छक, धरमनवां के हार निहचय, ई हमार लड़ाई, ढुनमुन नेता नहकी दुनिया, जोंक, मेहरारू के दुरदसा इत्यादि हैं। साथ ही आत्मकथा के रूप में 'मेरी जीवन यात्रा' पांच भागों में निबद्ध है। जीवनी में स्टालिन, लेनिन, कार्लमार्क्स, माओत्से तुंग, सरदार पृथ्वी सिंह, घुमक्कड़ स्वामी, जयवर्धन के जीवन को लिखा है। इसके साथ ही विश्व के देशों की यात्रा का विवरण, राजनीति, साम्यवाद, विज्ञान–दर्शन, पुरातत्व, बौद्धधर्म–संस्कृति–इस्लाम धर्म, इतिहास के पुस्तकों का लेखन (मध्य एशिया का इतिहास), अन्याय भारतीय भाषाओं के पुस्तकों का जीर्णोद्धार तथा हिन्दी रूपांतरण कोश इत्यादि जैसे लेखन सम्बन्धी कार्य राहुलजी द्वारा किए गए हैं।

हिन्दी प्रेम

यूं तो पूरे विश्व– साहित्य के प्रति राहुल जी की अपार श्रद्धा थीय चाहे वह किसी भाषा या विषय का साहित्य हो। बोलियों व जनपदीय भाषाओं के प्रति राहुलजी का विशेष सम्मान था इसी कारण कई नाटक भोजपुरी जैसी बोलियों में रचा है। हिंदी के अनन्य प्रेमी होने का प्रमाण भी इनकी रचनाधर्मिता से ही प्राप्त हो जाता है। पर उर्दू–फारसी से भी परहेज नहीं था। वे कहते थे "सौदा और आतिश हमारे हैं, गालिब और दाग हमारे हैं।" साहित्य में जो कार्य जायसी, कबीर, तुलसी, निराला, भारतेंदु, प्रेमचन्द के द्वारा किया गया, राजनीति व समाज सुधार में जो कार्य तिलक भगवान बुद्ध, महावीर, गांधी, नेहरू ने किया। इन सभी कार्यों का प्रतिबिम्ब किसी एक व्यक्ति में देखना है तो वह हैं – पंडित राहुल सांकृत्यायन।

हिंदी को खड़ी बोली नाम भी राहुल जी का दिया हुआ है। वर्तमान युगबोध की पकड़ और भविष्य के प्रति सजग दृष्टि ने उन्हें हिन्दी के नजदीक रक्खा। चूँकि उन्हें पता था– हिन्दी भारत के सर्वाधिक भूभाग में बोली–समझी जाने वाली भाषा है। इसके उद्धार से भारत का उद्धार होगा। फलतः अन्यान्य भाषाओं में रचित ग्रंथों का भी हिन्दी में विपुल मात्रा में अनुवाद किया। उनका कथन है–"हिंदी अंग्रेजी के बाद दुनिया के अधिक संख्या वाले लोगों की भाषा है। उनका साहित्य 750 ई०से शुरू होता है और सरहपा, कन्हापा, गोरखनाथ, चन्द, कबीर, जायसी, सूर, तुलसी, बिहारी, हरिश्चंद्र जैसे कवि और लल्लूलाल, प्रेमचंद जैसे प्रलेखक दिए हैं। इसका भविष्य अत्यंत उज्जवल, भूत से भी अधिक प्रशस्त है। हिंदी भाषी लोग भूत से ही नहीं आज भी सबसे अधिक प्रवास निरत जाति हैं। गायना (दक्षिणअमेजन), फिजी, मार्शेस, दक्षिण अफ्रीका तक लाखों की संख्या में आज भी हिन्दी भाषा भाषी फैले हुए हैं।'

निष्कर्ष

भारतीय संस्कृति के विभूतियों में राहुल सांकृत्यायन अग्रगण्य हैं। वे एक साथ ही कई आयामों के साथ हमारे सामने दिखाई पड़ते हैं। एक ही भौतिक शरीर में महानतम साहित्यकार, इतिहासकार, भारत विद्या विशेषज्ञ, प्राच्य विद्या विशारद, दार्शनिक, शोधकर्ता के साथ–साथ महान चिंतक और यायावर का दर्शन होना राहुलजी के बहुआयामी होने का स्पष्ट प्रमाण है।

सन्दर्भ ग्रंथ सूची

1. *मेरी जीवन यात्रा– लेखक. राहुल सांकृत्यायन ।*
2. *सिंह सेनापति – लेखक. राहुल सांकृत्यायन ।*
3. *जय यौधेय की भूमिका– लेखक. ।*
4. *डॉ. नामवर सिंह के व्याख्यान– (भागो नहीं दुनिया बदलो)– नई दुनिया की संभावना, संपादक– मैनेजर पाण्डेय ।*
5. *प्रो. तुलसीराम के व्याख्यान – महापंडित राहुल सांकृत्यायन एवं बौद्ध संस्कृति, नई दुनिया की संभावना, संपादक– मैनेजर पाण्डेय ।*
6. *अरुण प्रकाश के व्याख्यान– इतिहास और साहित्य, नई दुनिया की संभावना, संपादक– मैनेजर पाण्डेय ।*
7. *रामशरण शर्मा के व्याख्यान– मध्य एशिया और आर्य समस्या, नई दुनिया की संभावना, संपादक– मैनेजर पाण्डेय ।*
8. *मध्य एशिया का इतिहास– लेखक. राहुल सांकृत्यायन।*
9. *सिंहसिंहल घुमक्कड़ जयवर्धन– लेखक. राहुल सांकृत्यायन।*